नवम्बर 2015

वर्ष 28 चतुर्थ अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

9 जीवन उत्थान पूर्णता से

विशेष स्तम्भ

10 समसामयिक सामान्य ज्ञान
17 आर्थिक परिदृश्य
21 राष्ट्रीय परिदृश्य
24 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
29 क्रीड़ा जगत्
32 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
33 विज्ञान समाचार
35 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं
38 सारभूत तत्व कोष

लेख

41 विज्ञान लेख– परमाणु बम से जुड़े तथ्य
42 दार्शनिक लेख–बौद्ध धर्म-उद्भव से अवनति की ओर
44 चिकित्सा लेख–राष्ट्रीय ई-चिकित्सा की ओर बढ़ते कदम
47 कैरियर लेख–एस.एस.बी.

हल प्रश्न-पत्र

51 उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2014 (द्वितीय प्रश्न-पत्र)
71 उत्तर प्रदेश राजस्व लेखपाल भर्ती परीक्षा, 2015
77 रेलवे भर्ती सेल (पटना) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014
84 मध्य प्रदेश पैरामेडिकल संवर्ग एवं सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी संयुक्त भर्ती परीक्षा, 2015

नेशनल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड सहायक भर्ती परीक्षा, 2015

90 तर्कशक्ति
94 सामान्य सचेतता
97 मात्रात्मक अभिक्षमता
101 कम्प्यूटर जागरूकता
104 English Language
107 **आगामी आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक लिपिकीय संवर्ग परीक्षा, 2015 हेतु विशेष हल प्रश्न**
114 उत्तर प्रदेश चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा, 2015 हेतु विशेष हल प्रश्न

सामान्य/विविध

122 कम्प्यूटर : एक दृष्टि में
123 वार्षिक रिपोर्ट 2014-15–राष्ट्रीय संग्रहालयों, सांस्कृतिक दायों एवं संस्थानों की भारतीय कला तथा संस्कृति क्षेत्र में नई पहलें-पर्यवलोकन
127 ज्ञान वृद्धि कीजिए
129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

जीवन उत्थान पूर्णता से

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

आत्मज्ञानी श्री विराट गुरुजी से एक बार जिज्ञासु ने पूछा कि गुरुजी ! हमारे जीवन का पूर्ण उत्थान कैसे सम्भव है? How may we raise our level in all aspects and what can we do for it.

पूज्यश्री विराट गुरुजी ने चार शब्द प्रगट किए. उन्होंने कहा–

(1) समझदारी (Understanding),

(2) ईमानदारी (Honesty)

(3) जिम्मेदारी (Responsibility) तथा

(4) बहादुरी (Boldness) हो तो जीवन का परिपूर्ण विकास संभव है. संक्षेप में दिए गए ये चार सूत्र हरेक आयुवर्ग के एवं हर किसी विषय क्षेत्र में रह रहे हम सभी लोगों को अपने जीवन के लिए सम्यक् मार्गदर्शन करते हैं. इन चारों सूत्रों को अगर हम श्रमण भगवान महावीर की वाणी में व्यक्त करें तो वह होगा–

(1) समझदारी अर्थात् सम्यक् ज्ञान (Right Knowledge)

(2) ईमानदारी अर्थात् सम्यक् दर्शन (Right Perception)

(3) जिम्मेदारी अर्थात् सम्यक् चरित्र (Right Conduct)

(4) बहादुरी अर्थात् सम्यक् तप (Right Austerity Penance)

हर इंसान को स्वयं को समझदार बनाना अत्यावश्यक है अन्यथा वह इस जीवन में दुःख ही दुःख पाएगा. ना-समझ आदमी को कोई भी मूर्ख बना सकता है, ठग सकता है, परेशान कर सकता है, उसका शोषण कर सकता है. जबकि समझदार आदमी अपने व परिवार के हित की बात सोच सकता है.

समझदारी हित-अनहित का विवेक कराती है. समझदारी में इंसान से या तो कोई भूल होती नहीं और कदाचित् कोई भूल हो भी जाए तो वह उससे भी सीख ही हासिल कर लेता है. समझदार वह है जो किसी भी व्यर्थ के मुद्दों पर न उलझे, न बहसबाजी करे. न स्वयं परेशान रहे न ही दूसरों को परेशान करे. ये तब ही संभव है, जबकि उसे हर मुद्दे पर सम्यक् होकर जाना आए. स्व-निरीक्षण करना आए. हर हाल में जो इंसान स्व-निरीक्षण (self analysis) करता रहता है, वह समझदार होता जाता है. उदाहरण के तौर पर, घर में किसी ने आपसे कड़वा वचन कह दिया–अब आपका स्वाभिमान आहत हुआ, मन दुःखी भी हुआ. ऐसी स्थिति में अगर आप समझदार हैं तो आप मन को ज्यादा देर दुःखी नहीं रहने देंगे. कई अच्छी बातें भी उस कड़वी बात से सीखी जा सकती है, चलो उसका प्रयास करें. जैसे उसने कड़वा बोला तो मैं कई घण्टों तक निराश-हताश रहा, ऐसे ही अगर मैं कड़वा बोलता हूँ तो कितने लोगों को कितने घण्टों की पीड़ा दे देता हूँ. भविष्य में मैं कभी भी कड़वा नहीं बोलूँगा. अपशब्द का प्रयोग नहीं करूँगा, ऐसा सोचकर हम स्वयं को और अधिक सकारात्मक व जागृत बना सकते हैं.

●●●